I

भाग 2

ॐ

श्री श्री ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश, पार्वती, सीताराम, राधेश्याम, श्री जगन्नाथ जी, श्री पवन सुत हनुमान स्वामी को कोटिश: प्रणाम करने के पश्चात् सबसे प्रार्थना करती हूँ कि मुझ तुच्छ को कुछ ज्ञान प्रदान कराइए तथा सरस्वती की शक्ति व प्रवाह बढ़ाइये ताकि मैं परिवार के विषय में तथा अपनी चतुर्थ भाग जीवन के शान्ति प्राप्त के लिये कुछ औ लिख सकूँ। अपने next generation तथा उनके परिवार के लिये कुछ संदेश दे सकूँ कि यदि उन्हें कोई बता सके या पढ़ कर सुना सके कि वे किस परिवार के सदस्य हैं? तथा उनके पूर्वज किस प्रकार के थे? उसकी जानकारी प्राप्त करें और उनके आदर्श-वाद का कुछ अनुकरण करें। उनके लिये यह कितना आवश्यक है? मैं मानती हूँ कि पूर्वजों के विषय में उन्हें कुछ ज्ञान नहीं है वे उनकी मर्यादा, प्रतिष्ठा का क्या मूल्य समझेंगे? किस प्रकार उसका कुछ भाग अपना सकेंगे? यह भूल उनकी नहीं है सभी सदस्य इतने व्यस्त (busy) हैं कि वे अपने पूर्वज की कभी भी चर्चा नहीं करते तो बच्चे क्या समझें कि वे किस प्रकार के परिवार को belong करते हैं? और उनका परिवार के प्रति कर्तव्य (duty) क्या है?

हम लोगों के पूर्वज (ससुराल वाले) की history परिवार के सदस्य, (हमारे second cousin के uncle) ने परिवार के पूर्वजों की history लिखी थी जो हमारे जेठ श्री पिरथी सिंह के पास है उसमें हमारे ससुर श्री परमात्मा प्रसाद (स्वर्गीय) तथा उनकी माँ, बाप स्वर्गीय भाइयों का कुछ वर्णन अवश्य होगा पर मैं अपने इस अमेरिका में settled बच्चों को उस हद तक लाकर confused नहीं करना चाहती हूँ। उन्हें केवल उन्हीं के grand parents के ~~great~~ father स्वर्गीय श्री रघुवर दयाल

II

के जीवन का कुछ भाग अपने father-in-law स्वर्गीय श्री परमात्मा प्रसाद के आचार-विचार, कर्तव्यपरायणता (dutifullness), सच्चाई (truthfulness), सादगी (simplicity sincerity तथा आदर्शवाद (idealism) आदि गुणों में (qualities) में लाना चाहती हूँ क्योंकि उनके इन qualities में उनका पिता का inheritence किस प्रकार दिया हुआ था?

स्वर्गीय श्री रघुबर दयाल (Grand father-in-law) डिप्टी कलेक्टर थे पांच भाई थे वे शायद III वे उस समय के लिये उनकी आमदनी अच्छी मानी जाती थी एक के बाद दूसरी पत्नी का स्वर्गवास हुआ दोनों को मिला कर दो बेटे 3 बेटियां थीं घर चलाने तथा बच्चों के सुख के लिये तीसरी शादी भी कर लिया और अपनी नई पत्नी जो घूंघट में थीं उनसे कह दिया कि तुम्हें दुल्हन नहीं बनना है बल्कि पांच बच्चों की मां बन कर रहना है दादी मां बहुत सुंदर व स्वस्थ थीं साधारण परिवार से आई थीं कार्य कुशल थीं। बच्चों को अपनाते हुये घर सम्हाल लिया एक ही पुत्र स्वर्गीय श्री परमात्मा प्रसाद (स्वर्गीय) का जन्म दिया उनके 2½ वर्ष की आयु में पिता (श्री रघुबर दयाल) का Heart failure से स्वर्ग-वास हो गया। वे बहुत श्रेष्ठ व उत्तम विचार के थे। परोपकार, धर्म कार्य तथा परिवार पर खर्च बहुत करते थे नानकशाही मत को भी adopt कर लिया और फैजाबाद के अपने घर के हाल में मन्दिर बनवा कर गुरु ग्रन्थ साहिब को स्थापित किया। पूजा पाठ आरती का यथावत् प्रबन्ध किया था मंदिर के आस पास जमीन व बाग भी था। उसी जमीन पर हमारे ससुर जी ने कुछ कमरे व बरामदे बनवाये कि उसी के Rent से मन्दिर का maintenance होगा पर घर के सदस्यों ने अपना कर अपने बेटी दामाद को मालिक बना दिया था।

III

अतः कर हमारे ससुर जी ने वहाँ का प्रबन्ध बरसों रह कर भी अपने बेटे को कार्तिक-पूर्णिमा का जलूस निकालना, अखण्ड-पाठ आदि को आयोजित करते रहे। क्योंकर बनवा के दिया था घर वालों से क्या तय किये? मुझे नहीं पता था। उनके स्वर्गवास के पश्चात सभी प्रबन्ध हम लोगों का हुआ और वहाँ की property neglect होने लगी।

हम लोगों की दादी माँ, पति के स्वर्गवासी होने के पश्चात अपने देवर श्री दयाल एडवोकेट (Attorney) के परिवार में तीनों बेटा व तीनों बेटी को लेकर joint-family की तरह रहने लगीं। बाबा वकील साहब भी प्रतिष्ठित व उच्च-विचार के थे। उन्होंने अपनी भाभी (बूढ़ी अम्मा) को आदर सहित स्थान दिया और दूं बच्चों को प्यार से रखने का साहस किया। ऐसी विचार-धारा, मेल जोल इस युग में नहीं दिखाई पड़ता। जो भी income होती थी सारा घर उसी के अनुकूल standard बना कर रहता था, किसका क्या है? इसे जो earn करता था वह भी नहीं सोचता था। सबके साथ अनेकों का भाग्य जोड़ दिया जाता था क्योंकि आपस में असीम प्रेम का संचार था। हमारी दादी माँ ने भी जी जान से उस घर को सम्हाला व अपनाया था क्योंकि 30, 40 लोगों का भार kitchen में था जिसका अधिक कार्य वह स्वयं सम्हालती थीं। जब दादी माँ के बड़े बेटे ने Lko में service किया वे लोग लखनऊ रहने लगे तीनों बुआ का ब्याह वकील बाबा ने किया इसका विस्तार लिखना आवश्यक भी नहीं है और हमें याद भी नहीं है। सारांश यह है कि दादी माँ डिप्टी साहब के views, character, unselfishness (→ selflessness), dutifullness आदि की बातें सुनाती थीं और वकील बाबा की भी qualities उनसे मिलती जुलती बताती थीं और उन्हीं के प्रकार हमारे

IV

बन गया

ससुर जी का स्वभाव, वो मुझ पर प्रभाव पड़ा और हमारे
ससुर ने तो पूरी तरह inherit कर ही लिया था अब
या तो इन qualities को by birth प्राप्त किया था
या दादी माँ से story सुन २ कर adopt किया था।
दादी माँ की विशेषता एक ऐसी थी कि अपने ब्याह
के कई वर्ष बाद तक हमें यह नहीं अनुमान हुआ
कि कौन उनका सौतेला है? कौन अपना? कौन चचेरा?
सभी से बातचीत ऐसी करती थीं कि नवागन्तुक
को समझ में नहीं आता था। कई साल बाद मेरी
maid servant ने मुझे बताया था धीरे से कि यह
बुआ बाबूजी की सौतेली बहन और यह चचेरी
बहन हैं।

उन्हीं बाबा व वकील बाबा के views
की समानता का संक्षेप विवरण दे दिया। अब
इसे बढ़ाने से लाभ नहीं है। सभी पारिवारिक व्यक्ति
समझेंगे कि irrelevant कर दिया गया है। अपने
ससुर श्री परमात्मा प्रसाद जिन्होंने अपनी income से
परमात्मा भवन बनवाया जिसमें टोटल 46 कमरे 16 बरामदे
बड़े २ कई हॉल आदि हैं। इसके पहले एक और
मकान बनवाया था जो इसके आधा से कम
था। परमात्मा भवन बस्ती का सबसे बड़ा मकान है
इसे बनवा कर ससुर जी बहुत प्रतिष्ठित व सम्मानित
व्यक्ति हो गये थे। धन, मान व मर्यादा अधिक बढ़ गई।
पर उन्हें गर्व नहीं था। हाँ, अभिलाषा इस की बहुत थी
कि जो भी function करते थे उसे grand scale
में करते। हर जगह में वाहवाही व नाम होता गया।
स्कूलों में मैनेजर व सेक्रेटरी बनाये गये तथा
Sugar Mill ने legal adviser भी बना लिया। कई जिले
के बड़े २ लोगों ने जैसे राजा बाबू ने अपने मुकदमे
उन्हीं के पास भेजते थे। उनको धन कमाने के

V

साथ २ स्कूल भी करने की अधिक अभिलाषा थी। खूब कमाये खूब खर्च किये उसका वर्णन करना सूर्य को दीपक दिखाने के समान लगेगा। छोटे मुँह बड़ी बात होने-सी लगेगी। वस्तुतः पर अपना है बहुत सी मर्यादा बढ़ाना, धर्म, कर्म

परोपकार में इतने व्यस्त हुये कि वर्णन करने में मुझे आभास होने लगता है कि पढ़ने वाले समझेंगे मुझे शान मारने की आदत है। हालांकि वे मेरे ससुर थे उनकी प्रशंसाजनक चर्चा करने में अच्छा लगता है पर मुझे ऐसा feel क्यों होने लगता है? कि मैं बढ़-चढ़कर बोल रही हूँ। इसलिये इसका विवरण अधिक नहीं करूँगी। यदि परिवार का कोई सदस्य मुझसे पूछे तो मैं बता सकती हूँ विस्तार पूर्वक। एक बात अवश्य बता देना चाहती हूँ कि उन्होंने पारिवारिक सदस्यों तथा दूर वाले लोगों को emergencies में बहुत मदद

किया और विद्या-दान (पढ़ाने का खर्च सम्हाला) किया मैंने उसका फल प्राप्त किया और मेरे सारे बच्चे पढ़ने में बहुत तेज निकले तथा सफलता प्राप्त किये मेरे बच्चे कहने में मैं अपनी ननद के बच्चों को भी सम्मिलित करती रहती हूँ क्योंकि उन्हें अपना ही बना लिया था। धीरे २ सभी दूर २ बस गये हैं परन्तु प्रेम-भाव स्थापित रखने की चेष्टा सभी कर रहे हैं। मेरा हाल क्या पूछना है? मैं तो इस joint family के मोह-जाल से इतनी घिरी हूँ कि अब तक माया का त्याग नहीं कर सकी

सभी के सुखों में सुख मनाने लगती हूँ और दुःख में दुखी हो जाती हूँ। इस प्रकार से क्या मैं मुक्ति के मार्ग तक पहुँच सकूँगी? यदि नहीं तो अशान्ति का सामना करना पड़ेगा। यदि हाँ, तब तो शान्ति मिल जायेगी जिसकी खोज में यह लेखनी चलती जा रही है। मैं आशा करती हूँ

VI

कि यह लेखनी कोई रास्ता अवश्य निकालेगी क्योंकि लेखनी का प्रवाह व सामर्थ्य अवश्य कुछ होता है। जैसे बाल्मीकि रामायण, तुलसीकृत रामायण, महाभारत तथा बड़े बड़े लोगों की biography, Science की पुस्तकें आदि ये लेखनी की ही करामात है। यह हृदय की भावनाओं व यादों को उभार लाकर कागज पर प्रदर्शित करती है। लेखक सोच भी नहीं पाता है कि मैं इतना लिख सकूंगा।

मेरी भूलें

मैं अपने जीवन को अधूरा क्यों समझने लगी हूं? यह मेरी weakness of thoughts है। यह मैंने माना कि मुझे बहुत कुछ प्राप्त था सोना, चांदी, घर, मकान, गोशाला, गराज, खेती बारी, बाग़ बगीचा यहां तक कि जंगल भी अपना था पर इस समय इन सभी ने मेरा साथ छोड़ दिया है। यह सत्य है किन्तु मेरे पास बहुत कुछ प्राप्त भी है मैं ऐसा क्यों नहीं सोचती हूं? कि वही चीजें मेरे पास लौट कर आ गई हैं। सबसे अमूल्य-धन ईश्वर ने दिया है कि अपने सारे बेटा, बेटी, दामाद, बहू शिक्षित हैं और earn कर रहे हैं, सभी के पास अपना घर है, सभी के पास दो दो कार हैं, किसी एक के पास तीन कारें भी हैं आभूषण व कपड़े से सुसज्जित स्त्रियां हैं। भारत वर्ष में कार खरीदना उतना आसान नहीं था इससे कुछ के पास 4 स्कूटर हैं क्योंकि चारों को अलग २ जाना है। सारांश यह कि इन सबको अपना समझ कर संतोष धारण करना चाहिये। यह भी एक तरह की भूल है इस संसार में अपना कुछ है भी नहीं, न कुछ लेकर आए थे न लेकर जाना है। इन विचारों को लेकर अपनी भूल सुधारना उपयुक्त है और तभी जीवन में संतोष, ज्ञान व शान्ति की प्राप्ति होगी।

VII

मैं अपने को कभी २ गलत भी समझने लगती हूँ मुझमें संतोष बहुत है जभी कुछ हानि उठाई संतोष कर लिया। जो भी है संतुष्ट हूँ, सब कुछ मिल भी जाता है, सभी आवश्यकतायें सभी पूरी करते हैं, उससे अधिक मैं चाहती भी नहीं फिर अपने को दोषी समझना भी अपने आत्मा का निरादर करना होगा। इससे मुझे यह ज्ञान होना चाहिये कि संतोष का अभाव हृदय में नहीं है। आवश्यकता है कि मेरा ज्ञान-वर्धन (development) अवश्य होना चाहिये इसीसे शान्ति का समावेश होगा जिसकी खोज में अब तक 29 pages लिख डाला।

इस खोज के लिये धार्मिक-पुस्तकें तथा बड़े २ लोगों की जीवनी पढ़नी चाहिये। कभी २ magzines, Reader Digest पढ़ कर भी अच्छा लगता है इस प्रकार books का सम्पर्क बढ़ाने से समय अच्छी तरह बीतेगा और मानसिक-दुर्बलता कम होगी।

ज्ञान-वर्धन का मतलब यह नहीं हुआ कि मैं पढ़ाई करूँ उसके लिये मेरे grand children को अवश्य परिश्रम करना आवश्यक है। मेरे लिये इतना ही होना ठीक है कि बच्चों के सामने अच्छी २ बातें करें किसी की निन्दा या प्रपंच करके अपनी अज्ञानता न बढ़ायें और बच्चों पर दुष्प्रभाव न डालें। यह quality develop करने की शिक्षा मैं सारे पारिवारिक सदस्यों को दे रही हूँ। मेरा क्या मैं तो कुछ दिनों या वर्षों की मेहमान हूँ फिर भी मैं अपनी habits, mentality बर्बाद नहीं करना चाहती इस प्रकार की भावना बना कर सद्गुणों को प्राप्त करके रहने की शिक्षा मैं सभी को देना चाहती हूँ। आशा है इस प्रकार की भावना और विचार-धारा से गृह में कलह या मनोमालिन्य न बढ़ाने की चेष्टा सभी करेंगे।

VIII

मेरा मन है कि कुछ अपने मायके वालों को भी इस संदर्भ में सम्मिलित कर दूं, क्योंकि उनका पूरा विवरण इस परिवार में कुछ २ कुसुम शैल को पता होगा। अन्य बच्चे बड़े होने पर लखनऊ रहने लगे और उनका जाना आना कम हो गया। धीरे २ दूरी बढ़ती गई और सम्पर्क कम होता गया। केवल मैंने अपना [illegible] प्रति वर्ष लगाया होगा क्योंकि वह भी परिवार बहुत बड़ा है हर साल किसी भतीजा या भतीजी की शादी होती थी जिनमें मेरा जाना अनिवार्य होता था कभी २ कुछ बच्चे जाते थे कभी मैं अकेली जाती थी सात भतीजियां हैं सभी की wedding attend किया था भतीजे 14 हैं उनमें एक तो भीष्म पितामह की तरह अपना जीवन बिता रहा है आजन्म अविवाहित रह गया, 1942 में जन्म लिया था, Mining Engineering पास करके Military join कर लिया बिना किसी से पूछे, इस समय कर्नल के पद की शोभा बढ़ा रहा है। लखनऊ में अच्छा मकान बनवा दिया है उसको उसके मां, बाप, भाइयों के परिवार को सदा मदद की व है। शेष तेरह विवाहित उनमें केवल दो शादियां मैंने miss किया था एक में Railways में इतनी अधिक Strike चल रही थी कि जा न सकी, एक की शादी रेखा की शादी के 4, 5 दिन बाद हुई थी रांची से, मेरे लिये पहुंचना सम्भव न हो सका।

मेरे grand father अट्ठारहवीं शताब्दी में Civil Engineer थे और इन्दौर आदि में job करते थे ब्रिटिश साम्राज्य में का राज-दरबार उनके ही Supervision या architecture का बना था उसके लिये उन्हें "कैसरे हिन्द" का पद प्राप्त हुआ था। उन्हें चार

IX

लड़कियां दो छोटे थे। हमारी सबसे बड़ी बुआ अधिक दिन जीवित थीं उनका मुझसे बहुत साथ पड़ा, बहुत प्यार से हम लोगों से बोलती थीं, प्रति दिन खाने में कुछ Special बनाने बैठ जाती थीं। बाबा का रहन-सहन भी बहुत ऊंचे स्तर का था घोड़ा हाथी, घोड़े, रथ आदि से अपनी शोभा बढ़ाये थे। इनका बलिया से गांव में रहकर Newspaper व daily mail man आने का प्रबंध करा लिये थे। जबकि (गांवों में भारतवर्ष में अब बहुत post offices खुल गये) उन दिनों गांवों में प्रति दिन mail पंहुचने की सुविधा नहीं थी।

उनका घर गांव में एक महल की तरह अब भी बेमरम्मत खड़ा है इतने बड़े परिवार में किसी ने उसे maintained रखने का प्रयत्न कभी नहीं किया उसमें कुछ कारीगरी का काम भी है और मोटे 2 खम्भों से दो साइड गोलम्बर covered बरामदे के आगे बना है। इसके अतिरिक्त गांव के अपने बाग में हर प्रकार फल, खेती, फूल फुलवारी, गाय, भैंस सभी का प्रबन्ध बड़े scale का कर लिये थे। उसका पूर्ण वर्णन देना वही शान मारने वाली बात दिल में उठने लगती है इसलिए उसकी अधिक चर्चा नहीं ठीक है। केवल इतना कहना समुचित है कि गांव के पास उन्होंने काफी बड़ा मन्दिर बनवा कर (जिसे पंच मन्दिर कहते हैं) गांव की शोभा बढ़ा दिया था। बीच का बड़ा गुम्बज बहुत दूर से दिखाई देता था पर unfortunately 1935 के earth quake (जो भीषण रूप से बिहार का तहस नहस किया था) बीच का गुम्बज जिसमें श्री राम, लक्ष्मण, सीता की मूर्ति मय हनुमान जी के स्थापित थी बैठ गई (धंस गई)

8

बाकी चारों छोटे गुम्बज बिल्कुल intact थे पूजा-पाठ उनका यथोचित रूप से किया जा रहा था, पुजारी आरंभ से अबतक नियुक्त रहते हैं दान में मंदिर के नाम कुछ खेती दे दी गई है उससे पूजा व पुजारी का खर्च चला व अब भी चलता है सभी भाइयों के यहां से Cash भी आता है जिससे मन्दिर चल रहा है। बीच का गुम्बज वर्षों तक यों ही पड़ा रहा कई वर्ष बाद मेरे Engineer भाई स्वर्गीय श्री दयानन्द जी ने लंदन से बनवाया वैसा सुंदर गुम्बज तो नहीं बनवा सके पर flat छत वाला ~~छत~~ बनवा कर जयपुर से मूर्तियां मंगवा कर बड़े धूमधाम से स्थापना कराया जिसमें मेरे अधिकतर बच्चे व उनके पिता भी गये थे। मेरे दो भाई Chief Chemist of Sugar factory, एक Engineer और सबसे छोटे डाक्टर हुये। मेरा एक भाई II year वकालत में था उनकी शादी को केवल ४ साल हुये थे कि लखनऊ K.G. Medical College में कोई operation के बाद मृत्यु का शिकार बन गया। उनकी पत्नी स्वर्गीया सावित्री देवी का निधन 1986 में हुआ उनका ब्याह मेरे ब्याह के एक सवा महीने बाद हुआ था यानी 1932 में, ब्याह के 54 वर्ष बाद मेरी भाभी का निधन हुआ। 50 वर्ष का वैधव्य-जीवन देवरों की गृहस्थी में इस ठाट बाट से बिता देना कोई साधारण बात नहीं है पूरे परिवार को अपना कर रखती थीं कुछ [illegible] व गुस्सा भी करती थीं उसे घर वाले सहन करते थे इस प्रकार से patience व प्यार से घर चला कठिन होता है पर उस परिवार में भी कुछ qualities थीं व हैं जिनमें emergencies

XI

मैं एकता बहुत बढ़ा कर भाई लोग अच्छी तरह निभा लेते थे। जो कुछ परेशानी थी व है day to day की life में काफी छूट स्त्रियों को दे रक्खा है उसमें गड़बड़ी होती रहती है पर समय २ पर सभी लोग इतने एक हो जाते थे कि कोई interfere नहीं कर पाता था। यह quality भतीजों में भी देख रहा हूँ Emergency का प्रबन्ध ground करने में सभी भाई एक होकर अपनी २ पत्नियों को सहयोगी बना कर सफल हो जाते हैं। यह शोभा मैं तमाशबीन की तरह देख कर खुश होता हूँ और ठीक भी है prestige के समय अनुकूल बना लेना Daily affair में छूट देना। पर सम्भव है daily में भी भाई भतीजे उनको शिक्षा देकर प्यार से अपने व सभी के अनुकूल उन्हें बना सकते थे। पता नहीं क्यों इसमें क्यों इतनी शराफत दिखाई गई परिवार का nature कुछ ऐसा ही रहा। हमारे पिता की सज्जनता की कोई हद नहीं थी मेरे भाइयों ने काफी inherit किया था उनके बच्चों में भी काफी कुछ अंश है भतीजे काफी जगहों व देशों में बसे हैं एक England एक Australia रह रहा है, एक बेंगलोर, दो दिल्ली, दो गाजियाबाद, एक बोकारो, एक रांची, दो पटना, एक दमन, एक जमशेदपुर तथा एक रिहंडनगर में बसा है इनमें दो डाक्टर, एक प्रोफेसर, एक कर्नल एक बैंक मैनेजर, एक Security officer शेष आठ Engineers हैं इसी प्रकार ३ डाक्टर दामाद हैं, एक Conservator forest, एक G.M. Uptron, एक Engineer सातवां Dairy farm से retire होकर दिल्ली के पास Private company join किया है। सभी से मिलना जुलना तो शादी ब्याह में भी पूरी तरह नहीं हो पाता

XII

30 से अधिक व्यक्तियों का उपर परिवार हो गया है
देश, परदेश में लोग बिखर गये हैं मानते हैं आदर
करते हैं पर विशेष आना जाना मेरा छोटा भाई
Dr. S. N. Varma निभाता है सभी से रिश्ते दारी निभाने
की आदत है affordibility भी ईश्वर ने दी है
उसकी धर्मपत्नी विद्यालक्ष्मी (लता [illegible]) हिन्दी में विदुषी
की डिग्री से विभूषित है English की knowledge भी कुछ
रखती है पता नहीं High School (India का X) पास है या
नहीं" राय साहब सरहरी की family को belong करती है
दरभंगा होते भाई के वहाँ जाते समय journey
break के लिये मेरा काफी visit वहाँ का लग चुका
है। राय साहब का मकान काफी लम्बा चौड़ा construct
area का दुमंजिला है लता के बाबा के चारो लड़के
एक, एक आंगन और कुछ कमरे, बरामदे, बाथरूम, किचेन
ऊपरी कमरे अलग 2 occupy करके रह रहे हैं।
एक बार में सारा मकान घूमने से थकावट हो जाती है
दो तरफ फाटक common है बाहर से नहीं समझा
जा सकता कि अन्दर कितना accomodation है।
अच्छी बात यह है कि उनके परिवार के सभी सदस्य
का कोमल-स्वभाव, मृदु भाषी, सादगी देख कर तबियत
प्रसन्न हो जाती है। प्रत्येक के रिश्तेदारों से प्रत्येक
सदस्य इतनी अच्छी बातें व पूछताछ करेगा कि मन खुश
हो जायगा। Property, घर आदि का बटवारा हो
चुका है बिना किसी झगड़ा झंझट के। मैंने इतना
वर्णन किया है मैं जानता हूँ कि इस परिवार में
किसी को क्या interest होगा ? पर मेरे मन में था कि
है कि इस परिवार से नई रिश्तेदारी अवश्य जोड़ी
जाय। स्वभाव व खानदानियत से मैं बहुत प्रभावित थी व
है। लता ने मेरे परिवार में आकर परिवार का सम्मान
किया। हालांकि उसे बहुत कार्य-कुशल व परिश्रमी नहीं

XIII

नहीं समझा गया पर उसका प्रेम-भाव, कर्तव्यपरायणता की भावना व सहयोग कारण मेरे भाई को अपना आदर्शमय जीवन बिताने में परेशानी नहीं हुई। Management उनका कोई भी मौके २ पर कर देता है पर main hand, Cooperation लता का अवश्य होता है। इतनी बड़ी family में तरह२ के लोग है उसका criticism भी होता रहता है अक्सर मुझसे दिल खोल कर बातें करती है इससे हमें पता है लेकिन वह सब ignore करके वह पूरे परिवार से उत्तम व्यवहार रखती है जिससे हमारे भाई का जीवन संतोष-मय है।

इस परिवार या मेरे मायके परिवार का वर्णन करने के लिये लेखनी से प्रार्थना करती हूं कि वह इसको यहीं पर control कर दे अधिक लिखने से पढ़ने वाला घबरा सकता है।

XIIII

मुझे अंदाज लगता है कि यह दूसरा भाग भी उतना ही बड़ा हो जायेगा क्योंकि मेरे अन्दर यह भावना जागृत हो गई है कि जिन बच्चों व उनके parents को इतना अधिक अपना कर रखा था क्यों नहीं उनका भी कुछ विवरण दूं व लेखनी का प्रवाह मेरा अच्छा साथ दे रहा है कहीं २ मैं उसे control करती रहती हूं जिस प्रकार अपने बच्चे को अपने वश में रखने का प्रयास मां करती है कदाचित् पिता को भी वही ambition रहती है।

मेरी ननद स्वर्गीया श्री मती रामप्यारी देवी का सम्पर्क मेरे साथ मेरे घर में प्रवेश करने के बाद चार, चार वर्ष तक regular था हर वर्ष २,१ बार मैं ही मैके चली जाती थी वहां एक माह से अधिक नहीं रह सकती थी मेरे ससुर जाने से पहले आने का दिन decide कर लेते और मेरे पिता को लिख देते थे। उसी बीच मेरी ननद के कितने खत आ जाते थे कि भाभी आप जल्दी आइये, आप के बिना घर में अच्छा नहीं लगता इत्यादि। ये लोग २ बहनें चार भाई पैदा हुये थे पर अकेली बहिन, अकेला भाई बड़े हो सके थे उन्हीं दोनों का संदर्भ मेरे जीवन-गाथा में सम्मिलित है।

मेरी ननद बहुत सीधी व शालीन स्वभाव की थी, हर समय मेरे साथ रहना, खाना, नाश्ता, सोना, टहलना, नहा कर पूजा, पढ़ाई आदि साथ २ चलता था। वह अपनी मां की बहुत ही दुलारी बेटी थी उनसे कुछ काम लेना उनको अच्छा नहीं लगता था। उनके पिता कहते थे कि भाभी की सारी अच्छी आदतें सीख लो उसके साथ नाहते की

XV

चीजें बनाया करो इत्यादि। साल में ३,४ बार
बड़ी दावतें करते रहते उनमें एक sweet
(जो उन दिनों घर में बनता था) और begetan
कवाब ही हम लोगों को बनाना पड़ता था
सामान बनाना औरों की जिम्मेदारी होती थी
इतनी quantity होती थी कि हम लोग
Servant को अवश्य साथ में लगाये रहे
खैर, छोटी २ बातों का detail वर्णन बेवकूफी
है। उनका ब्याह संस्कार भी मेरे ससुर
ऊँचे स्तर से किया देन लेन सोना चाँदी
घर भर दिया। बारात आई राजा साहब की
चाँदी के छत्र के नीचे इतना सुंदर नौरा देख
सभी लोग वाह वाह करने लगे कितने भाग्यवान
सास, ससुर व बेटी हैं। वह भी अभी
Student थी। जमाने के हिसाब से चौथे दिन
विदा हुये लड़की भी साथ गई और 6 दिन
वापस बुला लिया गया था। बिजली न होते,
tourist Cinema का प्रबंध की चर्चा मैं पहले
कर चुकी हूँ। खाना पीना काश्मीरी cook बनाते
बारात सम्हाल के अंदर थी यानी 100 उधर
200 इधर के घराती। हमारे ससुर के प्रबंध
के अनुसार यह भीड़ अधिक नहीं थी क्यों
उनके कार्य-कर्ता बहुत से जूनियर वकील,
के मास्टर, विद्यार्थी चपरासी आदि उनके
थे। उनकी प्रथम बेटी पुष्पा का जन्म ब्याह के एक
के अन्दर हमीं लोगों के घर हुआ २ बेटी हुई
परमात्मा भवन में जन्म लिये तीसरी बेटी लखनऊ
उनके घर हुई। माह बाद वे बस्ती आ गई
और जब वह २½ माह की हुई हमारी ननद ने
टाइफाइड रोग का शिकार बन कर संसार त्याग

XVI

राजेन, शाबिन के बीच की बेटी बहुत सुंद
थी पर वह कुछ माह पश्चात लखनऊ जाकर नहीं र
गोद वाली को २½ वर्ष बस्ती में हम लोगों ने पाला।
अपनी नीना के इतना बड़ा दुख (हमारी नन्द का स्वर्ग-
में केवल उनको व्यस्त रख कर उस दुःख को भु
या कम करने को वह साधन थी इसके अतिरिक्त
क्या कहा जा सकता था? संतोष धारण करने के लि
ईश्वर कोई उपाय सोच कर साधन तैयार कराता
और मनुष्य उसमें उलझ कर शामिल हो जाता है।

पुष्पा भी २ साल लखनऊ न जाकर बस्ती
में education प्राप्त करती रही और कुसुम, शील के
साथ बहुत दुलार प्यार से पाली जा रही थी। दो
लड़के लखनऊ में बाबा के निकट रहने लगे पर
छुट्टियों में वे बस्ती आ जाते थे और हम लोगों
का मन बहुत enjoy करते थे कुछ वर्ष बाद हम लो
ने भी लखनऊ को निवास-स्थान बनाया व साथ
रहने लगे। तीनों बच्चे हमारी शिक्षा व कहना मा
थे। पढ़ने, व्यवहार, intelligent तीनों थे व हैं। उन
career बनाने की सलाह, ब्याह शादी तय करने,
प्रबंध, बच्चों की delivery आदि हर कार्यों में
मेरा विशेष हाथ रहा। अपनी २ जगह वे भी
उन्नति-शील परिवार तैयार हुये। अब भी र
होने पर वे आदर व प्यार का पूरा प्रदर्शन
हैं। उन्हें मैं उतनी याद करती हूँ जितना
सम्भव है। बहुत कर्तव्य-परायण व व्यस्त प
बन कर तैयार हुये। Education पर सब
पूरा ध्यान है। इसके आगे काफी सब
पता है। इस भाग को (द्वितीय) अधि
बढ़ाना नहीं चाहती क्योंकि पता नहीं कि
को पढ़ने में interest भी आये या न:

XVII

सभी के views change हैं। मेरा कहना या मेरी लिखी बातों में कुछ तत्व के समझें या नहीं? इसे केवल कल्पित या backwardness भी माना जा सकता है। Society का trend बहुत बदल गया है। स्वयं पूजा-पाठ सब किया जाता है पर बच्चा उसमें नहीं सम्मिलित हो रहा है इस पर कोई प्रभाव नहीं है। आदर्शवाद की stories उनको कभी न सुनाई जाती है न ऐसी पुस्तकें दी जाती हैं अस्तु, मैं बच्चों को दोष बिल्कुल नहीं दे सकता बल्कि मेरी opinion यही है कि जो India से trained होकर आये हैं उन्हीं की weakness कारण बच्चे Indianized नहीं हो पा रहे हैं। यानी Culture आदि नहीं अपना सके हैं।

किसी भी देश वाले रहें चाहे जहां पर अपना Culture नहीं बदलते, बदलते भी हैं तो कुछ ही प्रतिशत यहां तक कि भारतवर्ष के South Indian अपना Culture, Religion, cleanliness और language को पूरी तरह maintain करते हैं। मैं किसी को Rigid बनाना नहीं चाहती पर इतनी शिक्षा अवश्य देना चाहती हूं कि American society की अच्छी habits को अवश्य अपनावें और गलत बातें जैसे XII High School के पहले से love affair शुरू करना, कई २ लड़कियों व कई २ लड़कों के साथ लम्बी dating करके उनका त्याग न करें इसे तो मैं बिना marriage हुये divorce कहूंगी। अच्छा अपने योग्य वर ढूंढ कर parents की राय लेकर उससे बातें करें और मन की स्थिति नार्मल रख कर मनन-विचार करके approved लड़के से जल्दी ब्याह कर लें और उसी शादी को अन्त तक निभाते रहें। सज्जनता, मनुष्यता, culture

XVIII

को maintained रखना तभी possible होगा। दोनों को patience व behavior की coolness बढ़ा कर happy रहना चाहिये इसके लिये कुछ recreation का भी सुगम प्रबंध day to day life में रखना चाहिये। एक व्यक्ति यदि गुस्सा कर गया तो दूसरे को शान्त व चुप होना चाहिये। स्वभावतः इस संदर्भ में मैं अपनी बहू बेटी से प्रार्थना कर रही हूँ कि वे ही अधिकतर इसे अपनावें और अपना अपना जीवन सुधारते हुये संतोष मय जीवन बितावें। यदि वे इस ध्येय को अपना कर चलती हैं तो पति यदि ज़्यादा कटुता दिखा चुका होता है तो वह अवश्य पश्चाताप करेगा और दिनों दिन affectionate होता जायेगा।

मैं सोचती हूँ कि मैं आगे इस लेखनी को check करूं और अनुमान करूं कि पारिवारिक-सदस्य गण इन विचारों को अपनाना चाहते भी हैं या नहीं? क्या इसे backward और orthodox person की निरर्थक योजना समझते हैं? यदि ऐसा है तो अपने को निराशा की सागर में गोते लगाती हूँ कभी न कभी इसका अन्त तो होगा ही। ईश्वर की कृपा होगी तो मेरे जीवन-काल में कोई ऐसी घटना नहीं होगी उसके बाद की चिन्ता लेकर मरना कहाँ तक उपयुक्त होगा? यह ईश्वर जाने। मेरा ईश्वर से यही प्रार्थना है कि परिवार का भविष्य सुन्दर, सुगम व आदर्श-वादी बनावें मेरी मनोकामना व आशीर्वाद यही होगा सभी फूलें फलें और आपस में प्रेम की भावना जागृत करें। ईश्वर की सत्ता को अपने में अनुभव करें इससे वे सदाचारी व उच्च-कोटि के मनुष्य बनते जायेंगे। मुझे भी ईश्वर की प्रार्थना के साथ इसे सम्पूर्ण करना चाहिये और अपनी जीवन में शान्ति का मार्ग-दर्शन प्राप्त करना चाहिये॥

इति शुभम्   परिवार की मुख्य सदस्या

XVIII

मैंने अपने मुख्य २ पारिवारिक सज्जनों का वर्णन जो भी दिया है उसमें से कुछ अच्छे २ आदर्श-वादी विचारों को पारिवारिक सदस्य चुन कर अपना सकें तो मेरी यह सम्वाद सफल हो जायेगी। कम से कम अपने parents से कह सुन कर इसे story की तरह सुनकर English में अर्थ (meaning) समझना चाहिये। अपने विचार व ideal जो भी बनाना चाहते हैं उसे copy बना कर 4,5 line रोज लिखें इस प्रकार उन्हें बुरी आदतों को control करने में सुविधा होगी और भविष्य में छोटे भाई व बहिन पर भी प्रभाव अच्छा पड़ेगा॥

ईश्वर से आदर सहित प्रार्थना है कि श्री लक्ष्मी, गणेश का निवास हर परिवार में हो और वे कभी किसी के आधीन न हों॥

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति !

प्यार सहित परिवार को समर्पित
बहूजी,
मम्मी,
दादी मॉं,
नानी मॉं
पर दादी मॉं
पर नानी मॉं
(Mrs. G.P. Srivastava +
Mrs. Y. Srivastava)